**अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान का परिचय**

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान एक अग्रणी राष्ट्रीय संगठन है जिसे लोकप्रिय रूप से आइश के रूप में जाना जाता है जो संप्रेषण विकृतियों पर मानव संसाधन विकास, अनुसंधान, नैदानिक ​​देखभाल और सार्वजनिक शिक्षा के कारणों को आगे बढ़ाता है। यह संस्थान वर्ष 1966 में एक स्वायत्त संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था जो कि भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा पूरी तरह से वित्त पोषित है। मैसूर के मानसागंगोत्री में मैसूर विश्वविद्यालय से सटे 32 एकड़ के हरे भरे परिसर में स्थित है।यह एशियाई उपमहाद्वीप में एक अनूठा संस्थान है, जिसमें एक सुसज्जित पुस्तकालय और सूचना केंद्र के साथ लेडीज हॉस्टल, प्रशासनिक, शैक्षणिक, नैदानिक ​​भवनों और ज्ञान पार्क के साथ-साथ छात्रों को अनुशासनात्मक अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं वाले ग्यारह विभाग हैं। दो अतिरिक्त परिसर हैं - एक का नाम पंचवटी है और दूसरा नवगठित परिसर वरुणा, मैसूरु में है।पंचवटी परिसर में छात्रावास और आइश जिमखाना है, जिसमें रोगियों को समायोजित करने के लिए एक बहुस्तरीय इमारत की नींव भी रखी गई है; और संस्थान वरुणा में नए परिसर के निर्माण के लिए अच्छी तरह से प्रगति कर रहा है।

आइश एक स्वायत्त संगठन के रूप में कार्यकारी परिषद के निर्देशन के अधीन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के माननीय केन्द्रीय मंत्री के अध्यक्ष रूप में और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, कर्नाटक सरकार के माननीय मंत्री के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करता है। संस्थान के प्रमुख उद्देश्य व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना, नैदानिक ​​सेवाएं प्रदान करना, अनुसंधान संचालन करना और संप्रेषण विकृतियों जैसे श्रवण हानि, मानसिक मंदता, आवाज, प्रवाह और ध्वनि और भाषा संबंधी विकृतियों से संबंधित मुद्दों पर जनता को शिक्षित करना है।

संस्थान संपूर्ण भारत और विदेशों से छात्रों को आकर्षित करता है। यह पिछले 5 दशकों में संपूर्ण देश में ऑडियोलॉजी, स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी और विशेष शिक्षा के व्यवसायों के कारण को आगे बढ़ाने में प्रयास किया है। संस्थान ने वर्ष 1966 में एक स्नातकोत्तर कार्यक्रम के साथ शुरू किया था और अब संप्रेषम विकृति और संबद्ध क्षेत्रों से संबंधित डिप्लोमा से लेकर पोस्ट डॉक्टरल की डिग्री के लिए 18 दीर्घकालिक शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करता है। पाठ्यक्रम, जैसे, डिप्लोमा प्रोग्राम (डिप्लोमा इन हियरिंग एड और इयरमोल्ड टेक्नोलॉजी, डिप्लोमा इन ट्रेनिंग यंग हियरिंग इम्पेयर्ड चिल्ड्रेन एंड डिप्लोमा इन हियरिंग लैंग्वेज और स्पीच; अंडरग्रेजुएट प्रोग्राम्स (बी.ए.एस.एल.पी. और बीएसईड - हियरिंग-इंपेयरमेंट), स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी एवं फॉरेंसिक स्पीच साइंस और टेक्नोलॉजी के लिए क्लिनिकल लिंग्विस्टिक्स में पीजी डिप्लोमा प्रोग्राम्स; पीजी डिप्लोमा इन न्यूरो ऑडियोलॉजी और पीजी डिप्लोमा इन ऑगमेंटेटिव एंड ऑल्टरनेटिव कम्युनिकेशन; पोस्ट-ग्रेजुएट कोर्स (ऑडियोलॉजी में एम.एससी, स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजी में एम.एससी और एम.एस.एड-हियरिंग-इम्पेयरमेंट) छात्रों के लिए पेश किए जाते हैं। इन पाठ्यक्रमों के अलावा, संस्थान ऑडियोलॉजी, स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजी, स्पीच एंड हियरिंग, लिंग्विस्टिक्स और स्पेशल एजुकेशन में पीएचडी कार्यक्रम प्रदान करता है। यह पोस्ट-डॉक्टरल फैलोशिप भी प्रदान करता है। संस्थान ने सहायक / तकनीशियन स्तर पर जनशक्ति विकास की तेज दर की लक्ष्य की ओर देश के अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ सहयोग किया है और दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से डिप्लोमा इन हियरिंग लैंग्वेज और स्पीच (डीएचएलएस) कार्यक्रम शुरू किया है। यह कार्यक्रम वर्तमान में अखिल भारतीय भौतिक चिकित्सा और पुनर्वास मुंबई, अटल बिहारी वाजपेयी आयुर्विज्ञान संस्थान और डॉ. राम मनोहर लोहियाल अस्पताल, नई दिल्ली, जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, अजमेर; इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, शिमला, किंग जॉर्ज मेडिकल विश्वविद्यालय, लखनऊ, राजेंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, रांची, श्री रामचंद्र भंज, मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, कटक, और जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, भागलपुर में चल रहा है। डीएचएलएस (डिप्लोमा) कार्यक्रम को B.ASLP (बैचलर डिग्री) कार्यक्रम लिए तीन केंद्रों, जैसे नेताजी सुभाष चंद्र बोस मेडिकल कॉलेज (NSCBMC), जबलपुर; रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल, साइंसेज (RIMS), इंफाल और जवाहरलाल इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्टग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (JIPMER), पुदुचेरी में अपग्रेड किया गया है। अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों से लैस, संस्थान संपेषण संबंधी विकृति वाले सभी आयु वर्ग के सेवार्थियों को नैदानिक ​​नैदानिक सेवा प्रदान करता है। यह वाक्, भाषा, श्रवण और निगलन विकृतियों वाले व्यक्तियों का सेवा करता है। किसी भी प्रकार की संप्रेषण कठिनाइयों के लिए बाल चिकित्सा, वयस्क और जराचिकित्सा समूहों को मूल्यांकन और पुनर्वास सेवाएं प्रदान की जाती हैं। ऑडियोलॉजिस्ट, स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट, ईएनटी विशेषज्ञ, क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट, फिजियोथेरेपिस्ट और ऑक्युपेशनल थेरेपिस्ट द्वारा वाह्य-रोगी परामर्श नियमित रूप से संस्थान में दिए जाते हैं। परामर्श के आधार पर प्लास्टिक सर्जन, फोनो-सर्जन, न्यूरोलॉजिस्ट, बाल रोग विशेषज्ञ, हड्डी रोग विशेषज्ञ और आहार विशेषज्ञ जैसे पेशेवरों की एक टीम द्वारा बहु-अनुशासनात्मक सेवाएं भी प्रदान की जाती हैं। वाक्-भाषा चिकित्सा, विशेष शिक्षा, खिलाने और निगलने वाली चिकित्सा, भौतिक चिकित्सा और व्यावसायिक उपचार संस्थान में प्रथागत आधार पर प्रदान किए जाते हैं; और भी, अल्प अवधि के लिए प्रदर्शन चिकित्सा जरूरतमंद रोगियों को प्रदान की जाती है। संस्थान टेली-प्रणाली के माध्यम से भी अपनी सेवाएं प्रदान करता है। वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग और अन्य आईसीटी प्लेटफार्मों के माध्यम से वाक्, भाषा और श्रवण विकृति वाले व्यक्तियों के लिए टेली-मूल्यांकन और टेली-हस्तक्षेप सेवाएं (चिकित्सा, परामर्श, उपबोधन, अभिभावक प्रशिक्षण) किए जा रहे हैं। संस्थान अपनी विशेष इकाइयों या विशेष क्लीनिक जैसे कि ऑगमेंटेटिव एंड अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन (AAC) यूनिट, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) यूनिट, क्लिनिक फॉर एडल्ट एंड एल्डर्ली पर्सन विद लैंग्वेज डिसऑर्डर (CAEPLD), डिस्फेशिया यूनिट, फ्लुएंसी यूनिट, इंप्लांटेबल हियरिंग डिवाइसेस यूनिट, लर्निंग डिसेबिलिटी क्लिनिक, लिसनिंग ट्रेनिंग (LT) यूनिट, मोटर स्पीच डिसऑर्डर यूनिट, न्यूरोसाइकोलॉजी यूनिट, प्रोफेशनल वॉयस केयर (PVC) यूनिट, स्ट्रक्चरल ओरोफेशियल विसंगतियाँ (U-SOFA) यूनिट, वर्टिगो क्लिनिक और वॉयस क्लिनिक के माध्यम से विशेष नैदानिक ​​सेवाओं की सुविधा प्रदान करता है। संप्रेषण विकृतियों पर नैदानिक ​​और चिकित्सीय सेवाएं पांच मौजूदा नवजात स्क्रीनिंग केंद्रों और आउटरीच सेवा केंद्रों (OSCs) के माध्यम से भी प्रदान की जाती हैं। उप-मंडल तालुक अस्पताल, सागरा; सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी), हुल्लाहल्ली; प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC), अक्खीबल्लु; प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC), गुम्बल्ली; और विवेकानंद मेमोरियल अस्पताल (VMH), सरगुरु संस्थान के ओएससी में स्थित है।

अपने व्यावसायिकता और गुणवत्ता अनुसंधान उत्पादन के कारण संस्थान को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्कृष्टता केंद्र द्वारा बहरेपन के क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र के रूप में मान्यता दी गई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), भारत सरकार द्वारा उन्नत अनुसंधान केंद्र, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST)। संस्थान ने अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए अपनी पार्श्विका को आगे बढ़ाना जारी रखा और भारत की वित्त पोषण एजेंसियों, डीएसटी, जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT), भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR), यूजीसी और मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD), भारत सरकार, नई दिल्ली के संचालन से अतिरिक्त अनुदान प्राप्त किया। संस्थान संप्रेषण और इसके विकृतियों से संबंधित अनुसंधान को बढ़ावा देता है। संप्रेषण विकृतियों के नियंत्रण और रोकथाम, मूल्यांकन और उपचार के मुद्दों के साथ-साथ वाक् और श्रवण की दुर्बलता के लिए नई तकनीकों के परीक्षण और शोधन पर नैदानिक ​​रूप से प्रासंगिक कारणों के शोध पर विशेष जोर दिया जाता है। अनुसंधान गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए, संस्थान में "आइश अनुसंधान निधि (ARF)" के रूप में जाना जाने वाला एक अलग इंट्रामुरल अनुसंधान निधि स्थापित किया गया है। यह वाक् और श्रवण के क्षेत्र में बहु-विषयक अनुसंधान को बढ़ावा देने में मदद करता है। संस्थान के संकाय और अन्य पेशेवर अनुसंधान की मात्रात्मक और गुणात्मक उत्पादन दोनों को बढ़ाने के लिए इस योजना का उपयोग कर रहे हैं। उपरोक्त के अलावा, मानव जेनेटिक्स (UHG) के लिए एक अलग इकाई वर्ष 2013 में स्थापित की गई थी। यह मुख्य रूप से एक शोध इकाई है जो संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में काम करने वाले योग्य आनुवंशिकीविदों, अनुभवी चिकित्सकों और प्रख्यात संकाय के बीच सहयोगी परियोजनाओं के माध्यम से कार्य करता है। इकाई सेरेब्रल पाल्सी, हकलाना, और सेंसरिनुरल हियरिंग लॉस पर परियोजनाओं को क्रियान्वित कर रही है जबसे इसकी स्थापना आइश अनुसंधान निधि और डीएसटी द्वारा की गई है। इसमें इलुमिनामेसेक्यू, आयन-प्रोटॉन सीक्वेंसर, जेनेटिक एनालाइज़र 3500 (Sangers), रियल-टाइम पीसीआर (QuantStudio 6), ऑटोमेटेड डीएनए एक्सट्रैक्शन सिस्टम और आणविक जीव विज्ञान और पोस्ट-ट्रांसलेशनल एप्लिकेशन के लिए अन्य परिष्कृत इंस्ट्रूमेंटेशन सुविधाओं के साथ एक अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। ।

संस्थान को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के बहरेपन के नियंत्रण और रोकथाम के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए एक नोडल केंद्र के रूप में और साथ ही साथ इसके लिए मैन पावर जेनेरट करने के लिए भी मान्यता दी गई है । अपनी शैक्षणिक और अनुसंधान उत्कृष्टता के कारण, संस्थान का मूल्यांकन और आकलन ’ए’ (A) ग्रेड के साथ एनएएसी (NAAC) द्वारा किया गया है। यह अपने गुणवत्ता की प्रतिभा के लिए आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन भी है। इसके अलावा, इसे कॉलेज ऑफ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस के रूप में यूजीसी द्वारा और राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कल्याणक (आरबीएसके) के लिए एक सहयोगी संगठन के रूप में, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के योजना के अधीन मान्यता दी गई है।

संस्थान आम आदमी को संप्रेषण विकृतियों के बारे में जागरूक करने, विकृतियों की रोकथाम पर शिक्षित करने और ऐसे विकृतियों से पीड़ित व्यक्तियों को मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करने के लिए विभिन्न कदम उठा रहा है। संस्थान संप्रेषण विकृतियों जैसे मासिक सार्वजनिक व्याख्यान, सूचना संसाधनों की तैयारी और प्रसार, नुक्कड़ नाटक और रैलियों, अभिविन्यास व्याख्यान / संवेदीकरण कार्यक्रमों पर विभिन्न सार्वजनिक शिक्षा गतिविधियों का संचालन करता है ताकि संप्रेषण विकृतियों की रोकथाम पर जनता में जागरूकता पैदा की जा सके। इसके अतिरिक्त, स्कूल स्क्रीनिंग, औद्योगिक स्क्रीनिंग, बुजुर्ग स्क्रीनिंग और बेडसाइड स्क्रीनिंग की जाती है। देश और विदेश में संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों के द्वार पर टेली-मूल्यांकन और टेली-हस्तक्षेप सेवाओं का संचालन भी किया जा रहा है। संस्थान राज्य और देश के अन्य भागों में विभिन्न इलाकों में संप्रेषण विकृति स्क्रीनिंग शिविरों का आयोजन करता है। शिविरों के एक भाग के रूप में, संप्रेषण विकृतियों की रोकथाम और प्रबंधन पर जनता को शिक्षित करने के लिए व्यापक जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों के प्रबंधन पर माता-पिता / देखभालकर्ताओं के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए, संस्थान द्वारा केयर एंड होप (REECH) कार्यक्रम के माध्यम से संसाधन विनिमय और शिक्षा भी आयोजित की जाती है। सार्वजनिक शिक्षा के लिए सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग एक बड़ी पहल है। संस्थान विभिन्न मीडिया प्रारूपों में संप्रेषण विकृतियों पर विभिन्न प्रकार के सूचना संसाधनों का विकास और प्रसार करता है। संस्थान के कर्मचारी सक्रिय रूप से समाचार पत्रों और पत्रिका प्रकाशनों, लाइव रेडियो / टेलीविजन वार्ता और साक्षात्कार के रूप में विभिन्न जनसंचार माध्यमों और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से आम जनता में संप्रेषण विकृतियों की जागरूकता के लिए जन मीडिया आधारित सार्वजनिक शिक्षा बनाने में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

आइश को अपने पूर्व छात्रों पर गर्व है, जो न केवल भारत में, बल्कि विश्व के विभिन्न भागों में शैक्षणिक, नैदानिक ​​और प्रशासनिक सेटअप में महत्वपूर्ण पदों पर अधिपत्य (कब्जा/अधिकार) किए हैं। वे वाक्, भाषा और श्रवण के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय समाजों के सक्रिय सदस्य बनकर हमें गौरवान्वित किया है।

संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों तक पहुंचने में उत्कृष्टता हासिल करने का उत्साह कोई सीमा नहीं जानता। आइश गुणवत्ता पेशेवरों को बाहर लाने के लिए प्रतिबद्ध है जो अपने संप्रेषण विकृतियों के दुर्बल प्रभावों को दूर करने के लिए व्यक्तियों की मदद करने की चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। हम नए मानकों को स्थापित करने की उम्मीद करते हैं जिससे कि भविष्य के प्रशिक्षित पेशेवर किसी कार्य को बेहतर ढंग से करने और जरूरतमंद लोगों के जीवन में बदलाव लाने के लिए हमेशा अपने पैरों पर खड़े रहे। हमें यकीन है कि हमारे छात्र हमें और देश को गौरवान्वित करेंगे।

**अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान**

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान, भारत के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत 1965 में स्थापित, पिछले पांच दशकों में शीघ्रता से बढ़ी है। संचार विकृतियों के क्षेत्र में जनशक्ति विकास, अनुसंधान, नैदानिक ​​सेवाओं और सार्वजनिक शिक्षा पर काम करने के लिए संस्थान ने एक लंबा सफर एक मिशन के साथ शुरू किया है।जब हम इस लंबी सतत यात्रा को देखते हैं, तो हम यह देख सकते हैं कि संस्थान ने असंख्य मील के पत्थर सृजित की हैं। लेकिन, अभी भी अधिक चुनौतियों का सामना करना और मतभेद को हराना है। अनुसंधान और पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने में दक्षिण पूर्व एशिया में एक अग्रणी संस्थान होने के वजह से , इसने संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में अनेर फुट प्रिंट सृजित कि हैं। संस्थान में संप्रेषण विकृतियों वाले क्लाइंटों के उपचार के लिए बहु-विषयक टीम दृष्टिकोण है।

**दृष्टि :** मानव संसाधन के विकास करना, आवश्यकता आधारित अनुसंधान का संचालन करना, नैदानिक ​​सेवाओं में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना, संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में जागरूकता और अनिवार्य शिक्षा का निर्माण करने के लिए एक विश्वस्तरीय संस्थान बनना।

**मिशन:** संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी, नैतिक रूप से ध्वनि मानव संसाधन, वास्तविक शिक्षा, मूल अनुसंधान, नैदानिक ​​सेवाओं और सार्वजनिक जागरूकता को बढ़ावा देने, बनाए रखने और प्रदान करने के लिए।

**नैदानिक सेवाएं**

संस्थान संचार विकारों वाले व्यक्ति के लिए मूल्यांकन और प्रबंधन सेवाएं प्रदान करता है। उन्हें इस प्रकार बांटा जा सकता है:

**बच्चों में वाक् दोष विकृतिः** फांक होंठ और तालु, प्रवाह की समस्याएं जैसे हकलाना, कुछ ध्वनि उत्पन्न करने में कठिनाई जैसे रा / सा /

**बच्चों में भाषा विकृतिः** श्रवण हानि, मानसिक मंदता, आत्मकेंद्रित, सीखने की विकलांगता, अंगाघत, एप्राक्सिया।

**व्यस्कों में वाक् भाषा दोष विकृतिः** डिसरथ्रिया, एप्राक्सिया, एपेशिया, डिस्पैगिया, डिमेंशिया और अन्य स्थितियां। लोग प्रत्यक्ष रूप से संस्थान में या टेली मोड के माध्यम से नैदानिक ​​सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। विभिन्न विभाग और विशेष नैदानिक संप्रषण विकृतियों वाले व्यक्तियों की सेवा में योगदान दे रहे हैं।

**संस्थान द्वारा प्रदान की जाने वाली नैदानिक ​​सेवाएँ**

* संस्थान में नैदानिक ​​सेवाएँ
* विस्तार / आउटडोर सेवाओं और
* टेली सेवाओं

**संस्थान में नैदानिक सेवाएं**

संस्थान अच्छी तरह से राज्य के अत्याधुनिक कला प्रौद्योगिकी से लैस है जो संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों के इलाज के लिए आवश्यक है। लोग सेवाओं का लाभ उठाने के लिए प्रत्यक्ष रूप से संस्थान आ सकते हैं। सप्ताह के सभी कार्य दिवसों में श्रवण विज्ञानी, वाक्-भाषा दोष विज्ञानी उपलब्ध हैं।

**मुख्य नैदानिक सेवाएं**

**ऑडियोलॉजिकल मूल्यांकन और प्रबंधन**: श्रवण हानि की उपस्थिति या अनुपस्थिति, और डिग्री, प्रकार और श्रवण हानि के संभावित कारण का निदान करने के लिए प्रत्येक क्लाइंट के लिए एक विस्तृत श्रवण मूल्यांकन किया जाता है। बाद में, क्लाइंट को या तो चिकित्सा प्रबंधन के लिए सिफारिश की जाती है या ऑडिलॉजिकल प्रबंधन आवश्यक है, फिर क्लाइंट को व्यवस्थित रूप से मूल्यांकन किया जाएगा और या तो श्रवण एड का उपयोग करने, प्रत्यारोपण उपकरण के उपयोग और / श्रवण प्रशिक्षण के लिए सिफारिश की जाएगी।

**वाक् और भाषा मूल्यांकन और प्रबंधन:** संस्थान वाक् और भाषा विकृतियों वाले व्यक्तियों को मूल्यांकन और चिकित्सीय सेवाएं प्रदान करता है। बच्चों और वयस्कों में देखी जाने वाली वाक् भाषा विकृतियों का पूरा आकलन किया जाएगा और सेवार्थियों की जरूरतों के अनुसार उचित उपचार प्रदान किया जाएगा।

**अन्य विशेषज्ञों के साथ परामर्श:** ऑडीओलॉजिकल वाक् भाषा,नैदानिक, मनोवैज्ञानिक, ईएनटी, और फिजियो / पेशेवर थेरेपी सेवाएं सप्ताह के सभी कार्य दिवसों में उपलब्ध हैं।संस्थान में परामर्श सेवाएँ भी हैं जहाँ प्लास्टिक सर्जन, बाल रोग विशेषज्ञ, न्यूरोलॉजिस्ट, ऑर्थोडॉन्टिस्ट, और प्रोस्थोडॉन्टिस्ट और डायटीशियन जैसे विशेषज्ञ भी सप्ताह में एक बार उपलब्ध हैं। सेवार्थी एक छत के नीचे विशिष्ट दिनों में विशेषज्ञों से मिल सकते हैं, और विशेष परामर्श प्राप्त कर सकते हैं।

**विशेष शिक्षा सेवाएं:** विशेष आवश्यकताओं (0-6 वर्ष) वाले बच्चों के लिए विशेष शिक्षा विभाग विकसित किया गया है।यह पूर्व-शैक्षणिक कौशल और गुणवत्ता शिक्षा से जुड़े संप्रेषण विकृतियों वाले बच्चों के शैक्षणिक मुख्यधारा के अंतिम लक्ष्य की ओर प्रयास करता है।

**विस्तृत / आउटरीच सेवाएः** संस्थान की नैदानिक ​​सेवाओं को संप्रेषण विकृतियों की प्रारंभिक पहचान और प्रबंधन के लिए संप्रेषण विकृति रोकथाम विभाग के माध्यम से गांवों तक विस्तारित किया गया है। विशेष विभाग, मैसूरू शहर और उसके आसपास के अस्पतालों में ऑडियोलॉजिस्ट, वाक् भाषा दोष विज्ञानी और ई.एन.टी विशेषज्ञ की सेवाएं प्रदान करता है। यह संप्रेषण विकृतियों के लिए स्क्रीनिंग सेवाओं को भी शामिल करता है जिसमें शामिल हैं:

* नए जन्मे स्क्रीनिंग
* प्री-स्कूल / स्कूली बच्चों की स्क्रीनिग
* औद्योगिक श्रमिकों के लिए श्रवण स्क्रीनिंग
* बुजुर्ग नागरिकों की स्क्रीनिंग
* संप्रेषण विकृति की पहचान के लिए शिविर
* संज्ञानात्मक, संप्रेषण और निगलने वाले विकृतियों के स्केरिजिन
* प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (PHC) केंद्रों की जांच

**टेली सेवाएं**

'पहुंच-रहित' के लिए, 'टेली सेंटर' की स्थापना की गई थी, जिन्हें वाक् और श्रवण की समस्याओं के लिए प्रत्यक्ष सेवाओं का लाभ उठाने में कठिनाई होती है। सूचना और प्रौद्योगिकी के हाल के अग्रिम को अपनाते हुए, संस्थान टेली मोड के माध्यम से सेवाएं प्रदान करता है। टेली सेंटर, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग प्रणाली के माध्यम से देश भर के प्रमुख अस्पताल से जुड़ा हुआ है।

के लिए टेली सेवाएं उपलब्ध हैं

* संप्रेषण विकृतियों का मूल्यांकन और प्रबंधन
* संप्रेषण विकृतियों वाले बच्चों के लिए शिक्षा मार्गदर्शन
* संबंधित विषयों से जनता और अन्य पेशेवरों की संवेदनशीलता और शिक्षा
* हेल्पलाइन के माध्यम से पार्किंसंस रोग और अन्य स्थिति वाले व्यक्ति का मूल्यांकन और प्रबंधन

**संस्थान में विशेष चिकित्सालय**

संस्थान में संप्रेषण विकृतियों की पहचान करने और विशेष पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने के लिए कई चिकित्सालय/ इकाइयां और पेशेवरों की प्रशिक्षित टीम है।

वे हैं:

* संवर्धित और वैकल्पिक संप्रेषण (AAC) इकाई
* आत्मकेन्द्रीत स्पेक्ट्रम विकृति (एएसडी) इकाई
* श्रवण प्रशिक्षण इकाई (LTU)
* इंप्लांटेबल श्रवण यंत्र यूनिट
* प्रवाह इकाई
* पेशेवर सह देखभाल इकाई (पीवीसी)
* संरचनात्मक ओरो-चेहरे की विसंगतियों के लिए यूनिट (U-SOFA)
* मोटर वाक् विकृति (MSD) वाले व्यक्ति के लिए विशेष क्लिनिक
* स्वर चिकित्सालय
* भाषा विकृति वाले वयस्क और बुजुर्ग व्यक्तियों के लिए चिकित्सालय (CAEPLD)
* सिर चक्कराना चिकित्सालय
* विकलांगता सीखना चिकित्सालय

**आइश**

मनुष्य के रूप में, दूसरों के साथ संवाद न करना हमारे लिए असंभव है। एक या दूसरे माध्यम से, हमें अपने विचारों, सुझाव, भावनाओं और विचारों का आदान-प्रदान करना होगा। संप्रेषण लोगों के बीच एक सेतु है।प्रभावी ढंग से संप्रेषण करने में सक्षम होना सबसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल में से एक है। लेकिन, कुछ लोगों को संप्रेषण विकृतियों के कारण दूसरों को बताने में परेशानी हो सकती है। संप्रेषण विकृति प्रभावित कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति कैसे बोलता / सुनता है, प्रक्रिया भेजता है और अवधारणाओं को समझता है।

इस प्रकार, संप्रेषण विकृतियों के साथ लोगों के जीवन में आशा की एक किरण लाने के लिए,अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान (आइश), मैसूरू की स्थापना वर्ष 1965 में एक दृष्टि अभिव्यक्ति के साथ की गई ताकि सभी प्रभावी संप्रेषण को सुनिश्चित किया जा सके।

**2.अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान की स्थापना**

संस्थान को मनसागंगोत्री के परिसर में और उसके बाद के वर्षों में लॉगोपेडिक्स के संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था। इसे अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान का नाम दिया गया। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत्त संस्थान के रूप में स्थापित हुअ। आइश पिछले पांच दशकों से अपनी गतिविधियों को सफलतापूर्वक अंजाम दे रहा है

संस्थान 1957 (पंजाब संशोधन) अधिनियम, 1860 के सोसायटी पंजीकरण अधिनियम XXI के तहत एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत है। यह देश में अग्रणी संगठन है, जो संप्रेषण विकृतियों से पीड़ित लोगों की मदद और समर्थन करने के लिए अघिगिष्ट है।

**3. उद्देश्य**

**एक और सभी, संस्थान द्वारा प्रभावी संप्रेषण सुनिश्चित करने की खोज में**

* ऑडियोलॉजी, वाक् भाषा पैथोलॉजी और स्पैमी सहयोगी क्षेत्रों में ज्ञान और कुशल व्यवसायी तैयार करता है
* संप्रेषण संबंधी अव्यवस्था से संबंधित क्षेत्रों में बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान दोनों का संचालन करता है।
* जरूरतमंदों को सस्ती, सुलभ और उच्च गुणवत्ता वाला वाक्, भाषा और श्रवण नैदानिक ​​सेवाएं प्रदान करता है और
* संप्रेणण विकृतियों के टीजी की रोकथाम, हस्तक्षेप और नियंत्रण को संबोधित करने के लिए शिक्षा और आउटरीच कार्यक्रमों का विकास, कार्यान्वयन और मूल्यांकन करता है।

**दृष्टिः** संप्रेणण विकृतियों के बारे में जागरूकता के क्षेत्र में जागरूकता पैदा करने, वैश्विक स्तर पर सक्षम, नैतिक रूप से ध्वनि मानव संसाधन, गुणवत्ता शिक्षा, ओरिफाइनल रिसर्च, क्लिनिकल सेवाएं प्रदान करने के लिए ।

लक्ष्यः मानव संसाधन विकास के लिए एक विश्वस्तरीय संस्थान होना, आवश्यकता-आधारित अनुसंधान का संचालन करना, नैदानिक ​​सेवाओं में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना, संप्रेणण विकृतियों के क्षेत्र में जागरूकता और सार्वजनिक शिक्षा का निर्माण करना।

**4. प्रशंसा और मान्यता**

* विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा बहरेपन के क्षेत्र में उत्कृष्टता का केंद्र
* स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के राष्ट्रीय सुरक्षा कार्यक्रम (एनपीपीसीडी) की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए नोडल केंद्र।
* राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार लिए नोडल केंद्र।
* विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा आयोजित उन्नत अनुसंधान के लिए एक केंद्र।
* एक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के रूप में डीएसटी द्वारा मान्यता प्राप्त है।
* उत्कृष्टता के लिए केंद्र - एनएएसी द्वारा "ए" ग्रेड के साथ मूल्यांकन और मान्यता प्राप्त है।
* आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित
* अत्याधुनिक उपकरण / सॉफ्टवेयर के साथ ढांचागत सुविधाएं
* विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान विज्ञान और तकनीकी विभाग; भारत सरकार।
* स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत भारत सरकार की एक योजना, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यकम (RBSK) के लिए सहयोगी संगठन।

**5. प्रबंधन और संगठन**

संस्थान भारत सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्तपोषित है। यह कार्यकारी समिति के निर्देशन में कार्य करता है, जिसमें अध्यक्ष और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, कर्णाटक सरकार, उपाध्यक्ष के रूप में, माननीय केंद्रीय मंत्री के रूप में कार्य करते हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, कर्नाटक के सचिव, और उप-सचिव, कार्यकारी समिति के सदस्य हैं। मैसूर विश्वविद्यालय के कुलपति भी समितियों के सदस्यों में से एक है। मैसूर विश्वविधालय, मैसूर के मानसागंगोत्री के 32 एकड़ के हरे भरे परिसर में स्थित है। यह अपने ग्यारह विभाग और एक अच्छी तरह से सुसज्जित पुस्तकालय और सूचना केंद्र के साथ एशियाई उप-महाद्वीप में एक अनूठा संस्थान है। इन विभागों में छात्रों को अंतर-अनुशासनात्मक प्रशिक्षण की पेशकश करने के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं हैं।

**6.जनशक्ति और विकास**

संस्थान, संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में क्षमता निर्माण के उद्देश्य से, 15 कार्यक्रम प्रदान करता है। जनशक्ति संतति (उत्पादन) संस्थान के प्रमुख उद्देश्य में से एक होने के नाते, आइश संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्रों में कुशल और विशेष जनशक्ति की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिप्लोमा से लेकर पोस्टडॉक्टरेट डिग्री तक विविध शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करता है।

संस्थान में शैक्षणिक कार्यक्रमों की पेशकश की

* श्रवण यंत्र और इम्मोल्ड प्रौधोगिकी में डिप्लोमा (डीएचए और ईटी)
* वाक् भाषा एवं श्रवण (HLS) में डिप्लोमा - अर्ध दूरस्थ मोड के माध्यम से
* ऑडियोलॉजी और वाक् भाषा पैथोलॉजी के स्नातक
* विशेष शिक्षा के स्नातक (श्रवण हानि) {(B.ED. sp.Ed. (HI)}
* एसएलपी (पीजीडीसीएलपी) के लिए नैदानिक ​​भाषाविज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
* फोरेंसिक वाक् विज्ञान एवं प्रौधोगिकी में पीजी (PG) डिप्लोमा (पीजीडीएफएसएसटी)
* एम.एससी (श्रवण विज्ञान)
* एम.एससी (वाक् भाषा पैथोलॉजी
* शिक्षा विशेष शिक्षा (उच्च शिक्षा) के मास्टर {बी.एड. विशेष विक्षा. (एचआई)}
* पीएच.डी (श्रवण विज्ञान, वाक् भाषा पैथोलॉजी एंड वाक् एवं श्रवण)
* पोस्ट-डॉकटोरल फेलोशिप (श्रवण विज्ञान और वाक् भाषा पैथोलॉजी)

7. नैदानिक सेवाएं

संस्थान संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों, उनके परिवारों और संप्रेषण विकृतियों से संबंधित पेशेवर के लिए पुनश्चर्या कार्यक्रमों के लिए नैदानिक ​​सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। यह उन मूल में से एक है जिनके माध्यम से संस्थान की अन्य गतिविधियाँ अलग हो जाती हैं। इस प्रधान के तहत प्रदान की जाने वाली सेवाओं में रोकथाम, पहचान, मूल्यांकन और मूल्यांकन, पुनर्वास और प्रबंधन, परामर्श और मार्गदर्शन, विस्तार सेवाओं, वाक् और भाषा और श्रवण विकृति वाले व्यक्तियों के लिए सेवाओं और समुदाय आधारित सेवाओं का पालन करने की दिशा में सक्षम गतिविधियों की एक श्रृंखला शामिल है।

संपूर्ण नैदानिक ​​और चिकित्सीय सेवाएं, संप्रेषण विकलांग व्यक्तियों के समग्र पुनर्वास पर केंद्रित हैं, जो संस्थान में अनुभवी पेशेवरों द्वारा मामूली लागत पर एक मूल के तहत प्रदान की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थान टेली मोड और आउटरीच केंद्रों के माध्यम से नैदानिक ​​सेवाएं भी प्रदान करता है।

8. अनुसंधान

संस्थान वाक् भाषा विकृति विज्ञान, श्रवण वि5न, वाक् विज्ञान, श्रवण विज्ञान और ज्ञान के संबंधित क्षेत्र में दोनों बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान करने के लिए देश का अग्रणी संगठन है। संस्थान की अनुसंधान गतिविधियाँ दो व्यापक श्रेणियों में आती हैं: (ए) संकाय अनुसंधान और (बी) छात्र अनुसंधान। आइश अनुसंधान कोष की स्थापना वाक्, भाषा, श्रवण विज्ञान और अव्यवस्था के क्षेत्र में बहु-विषयक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए की गई है।

आइश पर अनुसंधान परियोजना को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों जैसे कि एनसीईआरटी, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, आईसीएमआर, डीएसटी, यूनिसेफ, डब्ल्यूएचओ, और हेल्पेज इंटरनेशनल द्वारा वित्त पोषित किया जाता है।

9. सार्वजनिक शिक्षा

इसकी दीवारों के भीतर प्रदान की गई नैदानिक ​​और चिकित्सीय सेवाओं के अलावा, संस्थान ने आम लोगों को संप्रेषण विकृतियों से अवगत कराने, विकृतियों की रोकथाम पर उन्हें शिक्षित करने और ऐसे विकृतियों से पीड़ित व्यक्तियों को मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। संस्थान विभिन्न प्रकार के चैनलों जैसे मासिक सार्वजनिक व्याख्यान श्रृंखला, नुक्कड़ नाटक, शिविर आधारित कार्यक्रम, जागरूकता रैली, सोशल मीडिया के माध्यम से सार्वजनिक शिक्षा, पर्चे आदि के माध्यम से संप्रेषण विकृतियों के बारे में जागरूकता पैदा करता है।

10. टेली एवं आउटरीच सेवाएं

संस्थान ने माना कि यात्रा / अर्थव्यवस्था आदि की बाधाओं को पार करने के लिए जरूरतमंदों के 'दरवाजे' पर सेवाएं देने की आवश्यकता है। अब संस्थान मूल्यांकन और हस्तक्षेप के लिए कला सूचना और संप्रेषण प्रौद्योगिकी (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, वेबसाइट, गूगल हैंगआउट, स्काइप, टीम दर्शकों, ई-मेल और अन्य परस्पर संवादात्मक टेली प्रणाली) के उपयोग के साथ नैदानिक ​​सेवाएं प्रदान करता है।

इसके अलावा, संस्थान नई जन्मजात स्क्रीनिंग, स्कूल स्क्रीनिंग, बुजुर्ग स्क्रीनिंग, शिविर आधारित स्क्रीनिंग और औद्योगिक स्क्रीनिंग जैसे स्क्रीनिंग कार्यक्रमों का संचालन करके आउटरीच नैदानिक ​​सेवाओं के माध्यम से पहुंच से बाहर हो जाता है।

11. विशेष शिक्षा सेवाएं

2. 1/2 से 6 वर्ष तक के विकास की उम्र के दौरान बच्चों के समग्र विकास के लिए प्रारंभिक गहन पूर्वस्कूली प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए संस्थान सेवाएं। लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में श्रवण दोष, मानसिक मंदता, सेरेब्रल पाल्सी और आत्मकेन्द्रीत स्पेक्ट्रम विकृतियों जैसे विशेष जरूरतों वाले बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है। पूर्वस्कूली प्रशिक्षण भाषा कौशल विकास पर विशेष जोर देने के साथ शैक्षणिक विकास के लिए प्रारंभिक तैयारी के सभी आवश्यक क्षेत्रों को आत्म-हेलफ, संज्ञानात्मक, मोटर और सामाजिक कवर करता है।

संस्थान पूर्वस्कूली से पास होने वाले बच्चों की सफल मुख्यधारा का समर्थन करता है और अनुवर्ती सेवाएं भी प्रदान करता है।

**अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान**

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान वाक् और श्रवण के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करने वाला एक प्रमुख संस्थान है। संप्रेषण विकृतियों और पुनर्वास सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए एक स्वायत्त संगठन के रूप में 9 अगस्त, 1965 को स्थापित किया गया। संस्थान, मैसूर में 32 एकड़ (दो परिसर) के विशाल क्षेत्र पर स्थित है। इसमें अत्याधुनिक सुविधाएं और उपकरण, सेवार्थियों और सामंजस्य विकृतियों से संबंधित क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला में अनुसंधान करने के लिए सहयोग है।

**प्रमुख उद्देश्य**

संस्थान के प्रमुख उद्देश्य प्रदान करना है

* पेशेवर प्रशिक्षण
* पाठक (रीडर) नैदानिक ​​सेवाएं
* सांप्रदायिकता संबंधी विकृतियों जैसे श्रवण दोष, मानसिक मंदता, आवाज, प्रवाह और ध्वनि-विद्या और भाषा संबंधी विकृतियों से संबंधित मुद्दों पर अनुसंधान करना और जनता को शिक्षित करना ।

**जनशक्ति विकास**

संस्थान, संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में क्षमता निर्माण के उद्देश्य से, 15 कार्यक्रम प्रदान करता है। जनशक्ति संतति (उत्पादन) संस्थान के प्रमुख उद्देश्य में से एक होने के नाते, आइश संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्रों में कुशल और विशेष जनशक्ति की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिप्लोमा से लेकर पोस्टडॉक्टरेट डिग्री तक विविध शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करता है।

**यह ब्रोशर (विवरणिका) क्यों?**

इस (ब्रोशर) विवरणिका को आइश में पाठक को शैक्षणिक जीवन का विचार देने के लिए डिज़ाइन किया गया है और संस्थान को संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में शीर्ष संस्थानों में से एक क्यों माना जाता है। अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान में हमारे लिए हमारे छात्र प्रमुख प्राथमिकता रखते हैं।

हम परिसर में उनके शिक्षण अधिगम और रहन-सहन के अनुभव को समृद्ध बनाने का प्रयास करते हैं, जो शिक्षा का उच्चतम गुणवत्ता वाला समृद्ध अनुभव है। आइश गुणवत्ता पेशेवरों को बाहर लाने के लिए प्रतिबद्ध है जो पुनर्वास व्यक्तियों की चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने के लिए संप्रेषण अक्षमताओं को दूर कर सकते हैं। हम उच्च गति निर्धारित करते हैं ताकि प्रशिक्षित पेशेवरों के भविष्य बैच हमेशा नई ऊंचाइयों तक पहुंचने का लक्ष्य रखें। आजीविका के रूप में इस पेशे की आपकी पसंद अत्यधिक मूल्यवान है।

संस्थान को विश्वास है कि संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों की सेवारत आपकी दृष्टि को संस्थान के संकाय और कर्मचारियों के कुशल मार्गदर्शन में महसूस किया जाएगा। आइश परिवार संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों के जीवन को प्रकाशमय करने के लिए और हमारे प्रयास में शामिल करने लिए आपका स्वागत करता है।

**ये किस प्रकार के पाठ्यक्रम है?**

यह संप्रेषण विकृतियों के मूल्यांकन, निदान, उपचार और प्रबंधन के विषय में है।

वाक् और श्रवण सिद्धियाँ उस डिग्री का अध्ययन करने का सही माध्यम है जो आप चाहते हैं जो आपको एक प्रभावशाली जीवन वृत्ति के लिए सक्षम बनाता है। डिप्लोमा से लेकर डॉक्टरेट की डिग्री तक के लिए मार्ग पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

**यह अध्ययन मुझे कहां ले जा सकता है**

श्रवणविज्ञानी और वाक् भाषा चिकित्सकों अस्पतालों, चिकित्सालयों, नर्सिंग होम में और अनिर्दिष्ट निजी अभ्यास सेटिंग में स्वास्थ्य देखभाल वितरण प्रणाली का अभिन्न अंग हैं।

आइश में उदार शिक्षा आपको अपने जुनून को बनाए रखने के लिए लचीलापन, ज्ञान और समझदारी प्रदान करती है। उसी समय, यह आपको विविधता, परिवर्तन और जटिलता से निपटने का अधिकार देता है जो आपको अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों के करीब लाता है।

**हम क्या प्रस्ताव देते हैं?**

डिप्लोमा कार्यक्रम

* श्रवण यंत्र और इयरमॉल्ड प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा (डीएचए एवं ईटी)
* प्रारंभिक विशेष शिक्षा में डिप्लोमा (श्रवण हानि) (डीइसीएसइ, एचआई)
* श्रवण,भाषा एवं वाक् में डिप्लोमा (डीएचएलएस)- अर्ध दूरस्त प्रणाली के माध्यम से

**अवर स्नातक कार्यक्रम**

* श्रवण विज्ञान और वाक् भाषा विकृति विज्ञान के स्नातक (बी.एएसएलपी)
* शिक्षा विशेष शिक्षा के स्नातक (श्रवण हानि) {बी.एड.एसपी.एड.(एचआई)}

**पीजी डिप्लोमा कार्यक्रम**

* एसएलपी के लिए नैदानिक ​​भाषाविज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीसीएलपी)
* फोरेंसिक वाक् विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में पीजी डिप्लोमा
* न्यूरो श्रवण विज्ञान में डिप्लोमा (पीजीडीएनए)
* संवर्धित और सतर्क संप्रषण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीएएसी)

**स्नातकोत्तर कार्यक्रम**

* एम.एससी (श्रवणविज्ञान)
* एम.एससी (वाक् भाषा दोष विज्ञान)
* शिक्षा विशेष शिक्षा के मास्टर (श्रवण हानि) {एम.एड.एसपी.एड.(एचआई)}

पीएच.डी कार्यक्रम

* पीएच.डी (श्रवण विज्ञान, वाक् भाषा दोष विज्ञान एवं वाक् एवं कश्रण)
* पोस्टडॉक्टोरल अधिछात्रवृत्ति (श्रवण विज्ञान एवं वाक् भाषा विकृति विज्ञान)

संस्थान छात्रों को उनके अभ्यास और दूसरों पर इसके प्रभावों के बारे में आलोचनात्मक और नैतिक रूप से सोचने में मदद करने पर ध्यान केंद्रित करता है। किसी भी आइश कार्यक्रम की समग्र संरचना कला प्रयोगशालाओं के परिसर राज्य से सुसज्जित सिद्धांत, नैदानिक ​​कौशल, अनुसंधान कौशल और क्षेत्र के प्रदर्शन का एक संयोजन है।

श्रवण यंत्र और ईयर मोल्ड प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा का उद्देश्य छात्रों को श्रवण यंत्रों के रखरखाव और मरम्मत के साथ-साथ ईयर मोल्ड प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण देना है। ध्यान व्यावहारिक प्रशिक्षण पर अधिक है और छात्र प्रशिक्षुओं को विभिन्न प्रकार के श्रवण यंत्रों की मरम्मत और ईयर मोल्ड की तैयारी में अनुभव दिया जाता है। इस कार्यक्रम के बाद, वे हियरिंग एड या इसके घटकों को बनाने वाली फर्मों और विपणन में कार्य कर सकते हैं।

प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में डिप्लोमा (श्रवण हानि) {डीइसीएसइ (एचआई)} 3 वर्ष से कम उम्र के बच्चों और उनकी देखभाल करने वालों की जरूरतों को पूरा करने में मदद करता है। वो प्रशिक्षित पूर्व-विद्यालय और पूर्व-शिक्षा कौशल में श्रवण हानि वाले बच्चों की मदद करने में सक्षम होंगे और वे पूर्वस्कूली शिक्षक, बाल कार्यकर्ता या शिक्षण सहायक के रूप में कार्य कर सकते हैं।

श्रवण, भाषा और वाक् (डीएचएलएस) में डिप्लोमा जनशक्ति उत्पन्न करने में सक्षम है जो मूल स्तर पर संप्रेषण विकृति वाले व्यक्तियों की जरूरतों को पूरा करता है।

आइश में सिद्धांत कक्षाओं का संचालन वीडियो सम्मेलन के माध्यम से 11 अन्य अध्ययन केंद्रों में वास्तविक समय में किया जाता है और संबंधित केंद्रों पर नैदानिक ​​प्रशिक्षण किया जाता है। प्रशिक्षु वाक्, निगलने और संप्रेषण विकृतियों के सहायक / तकनीशियन के रूप में काम कर सकते हैं।

श्रवण विज्ञान और वाक् भाषा दोष विज्ञान छात्रों को सभी आयु समूहों के व्यक्तियों में संप्रेषण विकृतियों की पहचान, रोकथम, मूल्यांकन और प्रबंधन में प्रशिक्षित किया जाता है। प्रशिक्षण में नैदानिक शिक्षण पर ध्यान देने के साथ सैध्दांतिक और व्यावहारिक पहलू शामिल हैं। छात्रों को अनुभवी संकाय की देखरेख में अनुभव प्राप्त होता है।

स्नातक ईएनटी, बाल रोग, न्यूरोलॉजी, पुनर्वास चिकित्सा, वाक् और श्रवण केंद्र, श्रवण सहायत उधोग, शैक्षणिक सेटअप आदि विभागों में अस्पतालों में अभ्यास कर सकते हैं। वे स्वतंत्र रूप में श्रवण विज्ञान / वाक् भाषा दोष विज्ञान के भी अभ्यास कर सकते हैं।

बी.एस.एड. (श्रवण हानि) जो उम्मीदवार इस पाठ्यक्रम को चुनते हैं, वे श्रवण हानि और विशेष शिक्षकों के साथ बच्चों के पुनर्वास के तरीकों के विषय में सीखेंगे और एकीकृत व्यवस्था में कार्य कर सकते हैं।

वाक् भाषा दोष विज्ञान के लिए नैदानिक भाषा विज्ञान में पी.जी. डिप्लोमा एक अंतः विषय है जो विशेष रूप से नैदानिक व्यवस्था में संप्रेषण अक्षमताओं के लिए भाषाई सिध्दांतों के आवेदन से संबंधित है। इसका उद्देश्य विशिष्ट नैदानिक व्यवस्था में भाषा के विकास और विकृतियों का अध्ययन करना है।

पी.जी.डिप्लोमा फॉरेंसिक वाक् विज्ञान और प्रौधोगिकी में किसी व्यक्ति की पहचान उनके वाक् से होती है। यह पाठ्यक्रम फॉरेंसिक विज्ञान के क्षेत्र में पेशेवरों के प्रशिक्षित करने का इरादा (प्रयोजन) रखता है।

संवर्धित और वैकल्पिक संप्रषण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा का उद्देश्य जटिल संप्रेषण आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के लिए ट्रांस-अनुशासनात्मक और क्षेत्र आधारित एएसी सेवाएं प्रदान करने के लिए वाक् भाषा रोगविज्ञानि और विशेष शिक्षकों **को** तैयार करने के लिए डिज़ाइन किए गए शैक्षिक और व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है।

न्यूरो-श्रवणविज्ञान में पी.जी.डिप्लोमा कार्यक्रम का फोकस श्रवण और वेस्टीबुलर प्रणाली के संबंध में अनुसंधान और नैदानिक कौशक प्रदान करने पर है। यह क्षेत्र से संबंधित अनुसंधान करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल भी प्रदान करता है।

एमएससी (ऑडियोलॉजी / स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी) विशेष कार्यक्रम क्रमशः श्रवण विज्ञान और वाक् भाषा दोष विज्ञान के क्षेत्र में गहन ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं। ये पाठ्यक्रम श्रवण और वाक् प्रणाली के सामान्य पहलुओं के साथ-साथ श्रवण और वाक् भाषा विकृतियों के अंतर निदान और प्रबंधन के बारे में विस्तृत प्रशिक्षण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। छात्रों को अनुसंधान की आवश्यकतों की पहचान करने और अनुसंधान की योजना बनाने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है जो देश में नैदानिक, पुनर्वास और अनुप्रयुक्त अनुसंधान को उन्नत करने में मदद करेगा। पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल कॉलेजों, शैक्षणिक संस्थानों, चिकित्सालयों में और ग्रेड- I श्रवणविज्ञान और वाक् भाषा दोष विज्ञानि और शोधकर्ताओं के रूप में भी काम कर सकता है। वे स्वास्थ्य देखभाल संस्थान, नर्सिंग देखभाल सुविधाओं, पुनर्वास केंद्रों, चिकित्सा अस्पतालों / ‘चिकित्सालयों आदि में भी कार्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, वे निजी अभ्यास भी कर सकते हैं।

एस.एस.एड. (श्रवण हानि) श्रवण हानि वाले बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में विशेष शिक्षकों को उन्नत स्तर का प्रशिक्षण देने का इरादा (प्रयोजन) रखता है। पाठ्यक्रम शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना बनाने, नीतिगत निर्णय लेने और विशेष शिक्षा के क्षेत्र में मास्टर प्रशिक्षण के रूप में सेवा करने की जरूरतों को पूर्ण करता है।

श्रवणविज्ञान / वाक् - भाषा दोष विज्ञान में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) और वाक् और श्रवण, वाक् भाषा दोष विज्ञान एवं वाक् एवं श्रवण के विशेष क्षेत्रों में आयोजित की जाती है। यह संप्रेषम विकृतियों के क्षेत्र में लागू अनुसंधान की गुणवत्ता और मात्रा बढ़ाने की दिशा में सक्षम है। पीएचडी धारक एक नैदानिक व्यवस्था में मास्टर चिकित्सक, नैदानिक ​​प्रशासक या अग्रणी के रूप में कार्य कर सकते हैं, नैदानिक ​​अनुसंधान के सहयोगी और समर्थकों के रूप में और शैक्षणिक सेटअप में भी कार्य कर सकते हैं।

श्रवणविज्ञान / वाक् भाषा दोष विज्ञान (ऑडियोलॉजी / स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजी) में पोस्ट -डॉक्टरल कार्यक्रम वाक् भाषा दोष विज्ञान और श्रवणविज्ञान (पोस्ट-डॉक्टरल प्रोग्राम स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजी और ऑडियोलॉजी) के क्षेत्र में उच्च स्तरीय अनुसंधान की मांगों को पूरा करता है। कार्यक्रम उत्कृष्ट विशेष, केंद्रित और आवश्यकता आधारित अनुसंधान की दिशा में सक्षम है।

आधारिक संरचना

* मल्टीमीडिया सुविधाओं के साथ 22 अध्ययन कक्ष।
* संगोष्ठी भवन में 180 की बैठने की क्षमता और सभागार में 400 की बैठने की क्षमता है।
* डीएचएल सम्मेलन कार्यक्रमों के लिए 09 केंद्रों से जुड़े दो-तरफा ऑडियो-वीडियो के साथ वीडियो सम्मेलन प्रणाली
* अंतरंग और बहिरंग मंच, जिम, अंतरंग खेलों के साथ जिमखाना।
* लड़कियों और लड़को के लिए छात्रावास
* अच्छी तरह से सुसज्जित पुस्तकालय और सूचना केंद्र
* नैदानिक ​​अभ्यास के लिए सीसीटीवी निगरानी के साथ बहुत अच्छी नैदानिक ​​सुविधा।
* योग्य संकाय और अन्य तकनीकी कर्मचारी

एक उत्कृष्ट जीविका चुनकर प्रभाव बनाएं और संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों के जीवन को बदलने में एक हिस्सा बनें।

**शैक्षणिक कार्यक्रम**

|  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| *क्र*  *सं* | *कार्यक्रम* | *अवधि* | *सीटों*  *की संख्या* | *चयन का*  *माध्यम* | *पात्रता* | *छात्र वृत्ति/*  *शैक्षिक*  *प्रति माह*  *(रुपये में)* |
| **डिप्लोमा कार्यक्रम** | | | | | | |
| 1 | 1. डिप्लोमा इन हियरिंग ऐड एंड ईयर मोल्ड टेक्नोलॉजी | 1 वर्ष | 28 | अर्हकारी परीक्षा में योग्यता | 12 वीं / II पीयूसी / डिप्लोमा इन इलेक्ट्रॉनिक्स / आईटीआई)\*\* | 250 |
| 2 | 1. डिप्लोमा इन अर्ली चाइल्डहुड स्पेशल एजुकेशन (हियरिंग इम्पेयरमेंट) | 1 वर्ष | 28 | अर्हकारी परीक्षा में योग्यता | 12 वीं / II पीयूसी \*\* | 250 |
| 3 | 1. डिप्लोमा इन हियरिंग, लैंग्वेज एंड स्पीच - विडियो सम्मेलन के माध्यम से | 1 वर्ष | 28  प्रति अध्ययन केंद्र | अर्हकारी परीक्षा में योग्यता | 12 वीं / II पीयूसी (विज्ञान क्षेत्र) \*\* | 250 |
| **स्नातक कार्यक्रम** | | | | | | |
| 4 | 1. बी. एएसएलपी | 4 वर्ष | 68 | अखिल भारतीय आइश प्रवेश परीक्षा में योग्यता के आधार पर | 12 वीं / II पीयूसी (पीसीएम / बी) | 800 |
| 5 | बी.एड.स्पे.एजु (एच आई) | 2 वर्ष | 22 | स्नातक अंकों के आधार पर | यूओएम द्वारा मान्यता प्राप्त कोई भी डिग्री | 400 |
| **पी. जी. डिप्लोमा कार्यक्रम** | | | | | | |
| 6 | 1. पी जी डिप्लोमा इन ऑग्मेंटेटिव एंड अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन | 1 वर्ष | 22 | स्नातक अंकों के आधार पर | बी.एससी [(वाक तथा श्रवण)/बी.एएसएलपी / बी.एड.स्पे.एजु (एच आई), स्वलीनता स्पेक्ट्रम विकृतियों, अध्ययन की अक्षमता, मानसिक प्रतिशोध, सेरेब्रल पाल्सी, एकाधिक विकलांगता] | 500 |
| 7 | 1. पी जी डिप्लोमा इन क्लीनिकल लिंग्विस्टिक्स फॉर स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी | 1 वर्ष | 12 | स्नातक अंकों के आधार पर | बी.एससी (वाक् तथा श्रवण)/बी.एएसएलपी | 500 |
| 8 | 1. पी जी डिप्लोमा इन फॉरेंसिक स्पीच साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी | 1 वर्ष | 12 | स्नातक अंकों के आधार पर | बी.एससी (पी/एम/ई/सीएस)/ बी.एससी (वाक् तथा श्रवण)/बी.एएसएलपी / बी.टेक/ एम.बी.बी.एस.) | - |
| 9 | 1. \* पी जी डिप्लोमा इन न्यूरो ऑडियोलॉजी | 1 वर्ष | 12 | स्नातक अंकों के आधार पर | बी.एससी (वाक् तथा श्रवण)/बी.एएसएलपी | 500 |
| नोट: सीटों की संख्या सक्षम पधाधिकारी से अनुमोदन के अधीन. \*\* आरसीआई द्वारा संचालित ए आई ओ ए टी 2020 में पास. | | | | | | |
| **स्नातकोत्तर कार्यक्रम** | | | | | | |
| 10 | एम.एससी (एस.एल.पी) | 2 वर्ष | 44 | अखिल भारतीय आइश प्रवेश परीक्षा में योग्यता के आधार पर | बी.एससी (वाक् तथा श्रवण)/बी.एएसएलपी | 1300 |
| 11 | 1. एम.एससी (श्रवण विज्ञान) | 2 वर्ष | 44 | अखिल भारतीय आइश प्रवेश परीक्षा में योग्यता के आधार पर | बी.एससी (वाक् तथा श्रवण)/बी.एएसएलपी | 1300 |
| 12 | एम एड.स्पे.एजु (एच आई) | 2 वर्ष | 22 | अखिल भारतीय आइश प्रवेश परीक्षा में योग्यता के आधार पर | बी. एड (एच आई) /  बी एस एड (एच आई) / बी.एड.स्पे.एजु (एच आई) | 650 |
| **डॉक्टोरल कार्यक्रम** | | | | | | |
| 13 | पीएच.डी (एस.एल.पी) –  जे आर एफ | 3 वर्ष | 09 | यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू | एम.एससी (एस.एल.पी) / एम.एससी (श्रवण विज्ञान) / एम.एससी (वाक् तथा श्रवण) / एमएएसएलपी, 1 वर्ष के कार्य अनुभव के साथ | 1 वर्ष - 20,000/-  2 वर्ष - 22,000/-  3 वर्ष - 25,000/- + एच.आर.ए. जैसा लागू हो;  आकस्मिकता अनुदान  20,000/- प्रति वर्ष |
| 14 | पीएच.डी (श्रवण विज्ञान) - जे आर एफ | 3 वर्ष | 09 | यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू | एम.एससी (श्रवण विज्ञान)/ एम.एससी (एस.एल.पी) / एम.एससी (वाक् तथा श्रवण) / एमएएसएलपी, 1 वर्ष के कार्य अनुभव के साथ |
| 15 | \* पीएच.डी (वाक् तथा श्रवण) |  |  | यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू | एम.एससी (एस.एल.पी) / एम.एससी (श्रवण विज्ञान) / एम.एससी (वाक् तथा श्रवण) / एमएएसएलपी, 1 वर्ष के कार्य अनुभव के साथ |
| 16 | \* पीएच.डी (स्पेशल एजुकेशन) |  |  | यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू | मैसूरु विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार | |
| 17 | \* पीएच.डी (लिंग्विस्टिक्स) |  |  | यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू | मैसूरु विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार | |
| **पोस्ट डॉक्टोरल कार्यक्रम** | | | | | | |
| 18 | आइश पोस्ट डॉक्टोरल फ़ेलोशिप | 2 वर्ष | 2 | इंटरव्यू. वाक्, भाषा और / या श्रवण विज्ञान के क्षेत्र में एक मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से पीएच.डी | 35,000/- + एच.आर.ए. जैसा लागू हो;  आकस्मिकता अनुदान 50,000/- प्रति वर्ष | |

\* छात्रवृत्ति के बिना

**अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान**

** मानसगंगोत्री, मैसूरु-570006**

**विशेष शिक्षा विभाग**

**शुरूआत**

**शिक्षा के लिए संवेदी अनुकूलन के लिए इकाई**

**(यू-एसएएफइ)**







**सभी द्वारा प्रभावी संप्रेषण के लिए सशक्तिकरण**

**पृष्ठभूमि**

विशेष शिक्षा विभाग विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को विभिन्न शैक्षिक सेवाएँ प्रदान करता है। पूर्वस्कूली प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रमुख सेवाओं में से एक है जो अकादमिक, संप्रेषण और सह पाठ्यक्रम पहलुओं पर केन्द्रित है। श्रवण दोष , मानसिक मंदता अंगाघात, आत्मकेन्द्रीत विकृति आदि से पीड़ित लगभग 250 बच्चे इस सेवा का लाभ उठाते हैं। इन बच्चों में से कुछ के पास अतिरिक्त संवेदी मुद्दे है, जैसे की उनके सर्वांगीण विकास में जो बाधा को सहन करने और अनुकूलन को अलग करने की खराब क्षमता। शिक्षा की मुख्यधारा में उन्हें बेहतर अवसर देने के लिए इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उनके संवेदी अनुभव को बेहतर बनाने पर ध्यान केन्द्रीत कार्यकलाप के साथ अध्ययन वातावरण का एक माध्यम उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। इस उद्देश्य के साथ शिक्षा के लिए संवेदी अनुकूलन की इकाई शुरू की गई है।

**अभिप्राय और उद्देश्य**

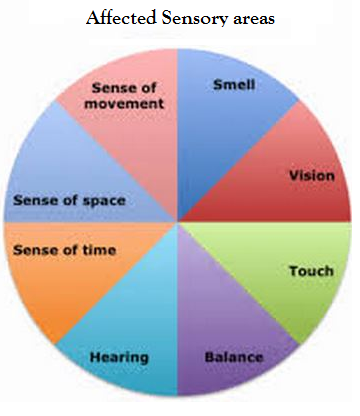
इस इकाई का मुख्य उद्देश्य विशेष आवश्यकताओं वाले छोटे बच्चों के संवेदी मुद्दों को पूरा करना है।. विशिष्ट उद्देश्य हैं

* द्ष्टि स्पर्श श्रवण गंध स्वाद शरीर की स्थिति और संतलन जैसी संवेदी प्रणालियों को मजबूत करने के लिए
* विभिन्न आंतरिक और बाह्य उत्तेजनाओं (संवेदी अनुकूलन) के अनुकूल होने की क्षमता बढ़ाने के लिए
* विभिन्न इंद्रियों के बीच समन्वय को बेहतर बनाने के लिए
* संवेदी प्रणाली के साथ मोटर गतियों के समन्वय को बढ़ाने के लिए

**संवेदी मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता** 

विवेक प्रणाली या अंग हैं जो हमारे आसपास के वातावरण को समझने में मदद कराते हैं । यह हमें प्रासंगिक जानकारी लेने और अप्रासंगिक लोगों को छानने में मदद करता है। संक्षेप में , यह हमें पर्यावरण में परिवर्तन के अनुकूल होने में मदद करता है।.

**Making sense of the sensory system**

मानसिक मंदता, अंगाघात, आत्मकेन्द्रीत वर्णक्रम विकृतिऔर कई विकलांगताओं वाले बच्चे, संवेदी मुद्दों जैसे अतिसंवेदनशीलता या हाइपोसेंसटीवीटी या अपनी संवेदी प्रणाली का सबसे अच्छा उपयोग करने में असमर्थ है। इस वजह से वे कक्षा में प्रस्तुत संवेदी उत्तेजनाओं में लेने के लिए पर्याप्त सतर्कता या ध्यान की स्थिति को बनाए रखने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। फलस्वरूप ये बच्चे पढ़ने , वर्तनी , लिखित और मौखिक भाषा के साथ निराश हो सकते थे । इसलिए संवेदी उत्तेजनाओं के अनुकूल प्रशिक्षण हस्तक्षेप का एक अनिवार्य घटक बन जाता है, जो बच्चे के सम्पूर्ण विकास को आसान बनाता है। इससे बच्चे के अनुकूल कौशल , उत्पादकता, सुरक्षा की भावना और बच्चे के आराम स्टार को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

**संवेदी मुद्दों की पहचान और प्रबंधन**

यह इकाई बच्चे की विशिष्ट संवेदी आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित कर सेवाएँ प्रदान करती है। बच्चे के संवेदी मुद्दों को शुरू में पहचाना जाएगा, जिसके बाद उपयुक्त गतिविधियों को संवेदी उत्तेजनाओं के अनुकूल बनाने के लिए उनकी मदद की जायेगी।

बच्चों को उनकी कामोत्तेजना की स्थिति के आधार पर अधिक/कम संवेदी इनपुट की आवश्यकता होती है । ऐसे बच्चों को संवेदी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जो एक उपायुक्त वातावरण को अपनाकर ही प्रदान किया जा सकता है जैसे की उज्ज्वल रोशनी वाले कमरों या कम रोशनी वाले कमरों का उपयोग करना, दूधिया या चमकीले रंगों का उपयोग करना या झूलना जैसी गतिविधियों को अंजाम देना, एक थेरेपी गेंद पर बैठना, चटाई में रोलिंग या धीमी गति से रोकिंग आदि प्रत्येक बच्चे में संवेदी मुद्दों के आधार पर संबोधित करने की आवश्यकता होती है।

**माता पिता के लिए मार्गदर्शन**

सामान्यीकरण की सुविधा के लिए घर के वातावरण में गतिविधियों को करने के लिए माता पिता को सुझाव प्रदान किए जाएंगे ।

**आधारिक संरचना**

**सामाग्री /उपकरणों:** यूनिट सामाग्री/ उपकरणों का एक संग्रह प्रदान करता है जो बच्चे में संवेदी विकास को बढ़ाता है।

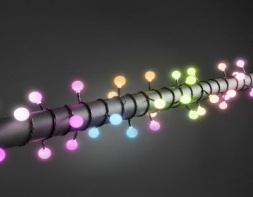
संतुलन की भावना को विकसित करने के लिए झूला, संतुलन तख्ता, ट्राइम्पोलिन थेरेपी बोल, बहुमुखी डिस्क, ब्रीक वाल्क आदि आधारभूत सामग्री/उपकरण है।

**बच्चों में संवेदी अंतर तक पहुँचना**

स्पर्शनीय बोर्ड , संवेदी चटाई, बनावट की गेंदें, फ्लास्क ,जेल बैग स्पर्शनीय इंद्रियाँ ।



एंटीसेप्टिक तरल, तुलसी के पत्ते, पुदीना के पत्ते, अगरबत्ती, महक की बोतलें आदि घ्राण/गंध संबंधी संवेदना के लिए



एलईडी बल्ब , घूर्णन रंग बल्ब, गुब्बारे, रंगीन चित्र/तस्वीरें दृश्य उत्तेजना के लिए |



संगीत, आतिशबाजियों, घंटानाद श्रवण अनुकूलन के लिए।

**संवेदी कमरा**

ये गतिविधियां समर्पित संवेदी कमरों में की जाएंगी। रेट के गड्ढे और पानी का खेल संकलित आकर्षण हैं।

**हमारा लक्ष्य**

****देश भर से पूर्वस्कूली केंद्र में सेवाओं का लाभ उठाने वाले विशेष बच्चों की संवेदी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ।

**विशेष शिक्षा विभाग**

**अखिल भारतीय वाक श्रवण संस्थान**

**मानसगंगोत्री, मैसूर – 570006**

**फोन : 0821 – 2502000, 2502100, Ext. 252,565, 566, 571,**

**फैक्स : 0821-2510515**

**ईमेल :** [**spledn\_aiish@aiishmysore.in**](mailto:spledn_aiish@aiishmysore.in)

**वेबसाइट: www.aiishmyosre.in**

**टोल फ्री: 18004255218**

**कार्य-समय : 9:00 am to 5:30 pm (सोमवार- शुक्रवार)**

**अवकाश का दिन : केंद्र सरकार का अवकाश**



**द्वारा विकसित** :डॉ. स्वप्ना**,** श्रीमती. श्रीविद्या.वी, **श्रीमती.** सुबलक्ष्मी.जे, सुश्री. अंजलि जोस़ेफ **विशेष शिक्षा विभाग के कर्मचारी**

1. **सेवा/सुविधा का नाम: देखभालकर्ता साक्षारता प्रशिक्षण इकाई (सी एल टी यू )**
2. **उद्देश्य /कार्य :** सेवा को संप्रेषण विकृति वाले बच्चों के देखभाल करने वाले / माता पिता को प्रदान किया जाता है जो निरक्षर या अल्प-साक्षर हैं और विशेष शैक्षिक सेवाओं के लिए नामांकित हैं।
3. **उद्देश्यों: अपने और अपने बच्चे में अंतर लाने के लिए माता पिता की मदद करना**

* माता पिता को सहायता और सेवाएँ प्रदान करना।
* आत्मविश्वास के साथ बच्चे को संभालने के लिए माता पिता को प्रशिक्षित करना
* बुनियादी साक्षारता कौशल विकसित करने के लिए माता पिता को शिक्षण देना जैसे कि
* अक्षर और संख्या की पहचान
* शब्दों और सरल वाक्यों को पढ़ना
* शब्द और सरल वाक्यों लिखना
* संख्या और बुनियादी गणितीय कार्य

1. **कार्य :**

* माता पिता / देखभाल करने वालों का नामांकन जो अनपढ़ या अल्प-साक्षर हैं ,जिन्हें सी एल टी यू सेवा में विशेष शैक्षिक सेवाओं के लिए नामांकित किया जाता है
* निरक्षर/अल्प-साक्षर माता पिता / देखभाल करने वालों की पहचान
* माता पिता / देखभाल करने वालों से उनके साक्षारता की अवस्था के बारे में पूछताछ की जाएगी
* माता पिता /देखभाल करने वालों से सी.एल.टी.यू में शामिल होने के लिए परामर्श किया जाएगा
* आधारभूत स्थिति के लिए माता पिता / देखभाल करने वालों का आकलन करना
* उनके पढ़ने और लिखने की क्षमता (वर्णमाला की पहचान) की जांच करने के लिए एक अनौपचारिक परीक्षा आयोगित की जाएगी (अक्षर की पहचान)
* **माता पिता/ देखभालकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण:**
* हर छह महीने के लिए समय सारणी तैयार की जाएगी।
* समय सारणी के अनुसार कक्षाएँ आयोजित की जाएंगी, जिसमें पढ़ना, लिखना और गणित जैसे विषय सम्मिलित होंगे।

1. **आधारिक संरचना /उपकरण**

* सत्र विशेष रूप से आवंटित इकाई में किए जाते हैं जो कि सी.एल.टी.यू कमरा संख्या 32 है।

1. **शुल्क लगाया गया :** कोई शुल्क नहीं लिया जाता है ।
2. **दी गई सेवाओं की समय / अवधि**

* सी.एल.टी.यू: साप्ताहिक 2 सत्र विशेष शिक्षकों के समय स्लॉट पर निर्भर करता है।

**प्रीस्कूल प्रशिक्षण कार्यक्रम**

**निजी सेवाओं की प्राप्ति और नामांकन के लिए निबंधन और शर्तें**

1. **प्रशिक्षण की अवधि**

* बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार एक साल से लेकर अधिकतम तीन साल तक बच्चों को पूर्वस्कूली प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।
* प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के अंत में प्रत्येक बच्चे का मूल्यांकन किया जाएगा। समूह के मध्य संक्रामण का निर्णय बच्चे के स्तर और प्रदर्शन के आधार पर किया जाएगा।
* किसी भी बच्चे को पूर्वस्कूली प्रशिक्षण कार्यक्रम से खारीज की जा सकती है जो शुरूआती अवधि के मामले में बताई गई है –
* पूर्वस्कूली नियमों और विनियमों का अनुपालन न करना , विशेष रूप से उपस्थिती के संदर्भ में ,
* जब बच्चे ने शिक्षा के अगले स्तर पर आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त प्रगति की है ।

1. **शैक्षणिक अनुसूची** :

* प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष का विस्तार शैक्षणिक वर्ष के जून से लेकर अनुगामी वर्ष के अप्रील तक होता है।
* प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष को दो कार्यकाल में विभाजित किया जाता है जून से नवंबर और दिसंबर से अप्रैल।
* पहला कार्यकाल जून के महीने में और दूसरा दिसंबर में प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष में शुरू होगा।
* प्रत्येक वर्ष सम अवधि के अंत में मई के महीने मैं एक महीने की अवधि के लिए गर्मियों की छुट्टी और विषम अवधि में एक पखवाड़े के लिए दशहरा अवकाश होगा।

1. **प्रवेश के लिए मानदंड :**

* पूर्वस्कूली में प्रवेश केवल प्रत्येक वर्ष के प्रथम कार्यकाल की प्रारंभ में माना जाएगा
* केवल एक बच्चा जो छह महीने की न्यूनतम अवधि के लिए पूर्वस्कूली माता-पिता (जनक) सशक्तीकरण कार्यक्रम( पी.पी.ई.पी) में भाग ले रहा है, प्रीस्कूल में प्रवेश के लिए पात्र होगा ।
* प्रवेश के लिए बच्चों का चयन पेशेवरों द्वारा किए गए एक व्यापक मूल्यांकन, पी.पी.ई.पी में बच्चे की नियमितता और संबन्धित श्रेणियों के समूहों में रिक्ति के आधार पर किया जाएगा ।
* बच्चों को सामान्यतः चार श्रेणियों में बांटा जाता है- आत्मकेन्द्रीत वर्णक्रम विकृति, श्रवण हानि, बौद्धिक विकलांगता और अंगाघात के साथ साथ बौद्धिक विकलांगता या अन्य कई अक्षम स्थितियाँ।
* विभिन्न विकलांगताओं के मामले में, बच्चे को सबसे अधिक प्रचलित विकलांगता के आधार पर विशेष प्रीस्कूल समूह को सौंपा जाएगा।
* पूर्वस्कूली कार्यकाल/अवधि के दौरान किसी भी बच्चे को अतिरिक्त विशेष शैक्षिक प्रशिक्षण जैसे पाठ्यक्रम समर्थन सेवा ( सी एस एस ), गृह प्रशिक्षण के लिए शैक्षिक मार्गदर्शन आदि का लाभ नहीं लेना चाहिए।

1. **प्रवेश की आयु** :

* पूर्वस्कूली प्रवेश के लिए आयु सीमा 3 वर्ष से 6 वर्ष है ।
* हालांकि 2.6 से 2.11 वर्ष तक की आयु के बच्चों को छह महीने से अधिक समय के लिए पी.पी.ई.पी. में भाग लेने पर वरीयता दी जाएगी।
* श्रवण दोष वाले बच्चों को कालानुक्रमिक आयु और प्रासंगिक ओडियोलोजिकल आकलन के आधार पर पूर्वस्कूली में प्रविष्ठ कराया जाएगा ।
* आत्मकेंद्रित , बौद्धिक कमी, अंगाघात या विभिन्न विकलांग जैसे न्यूरोदेवलपमेंटल विकृतियों वाले बच्चों को मानसिक उम्र और/या भाषा की उम्र और अन्य खोजे गये प्रासंगिक निष्कर्षों की रिपोर्ट के आधार पर भर्ती किया जाएगा।
* पूर्वस्कूली में प्रवेश के लिए श्रवण हानी वाले बच्चे की कालानुक्रमिक आयु 6 वर्ष से कम होगी।
* पूर्वस्कूली में प्रवेश के लिए बौद्धिक कमी वाले बच्चे की मानसिक आयु 3 वर्ष से अधिक और कालानुक्रमिक आयु 10 वर्ष से कम होगी।

1. **प्रशिक्षण में प्रयुक्त भाषा :**

* वर्तमान में , पूर्वस्कूली प्रशिक्षण केंद्र कन्नड, मलयालम, हिन्दी, तमिल, तेलुगू और अंग्रेज़ी में सेवाएँ प्रदान करता है। एक निर्धारित समय के लिए सेवाओं को अन्य भाषाओं में विस्तारित किए जाने की संभावना है।
* बच्चे को पूर्वस्कूली प्रशिक्षण अवधि के दौरान केवल एक भाषा में प्रशिक्षित किया जाएगा।
* प्रशिक्षण में उपयोग की जाने वाली भाषा को बच्चे की मूल भाषा (मातृभाषा-कन्नड़, मलयालम, हिंदी, तमिल, तेलुगु और अंग्रेजी) के आधार पर चुना जाएगा या वह भाषा जिसके लिए वह मुख्य रूप से उजागर करती/करता है।

1. **आकलन**

* पूर्वस्कूली प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले बच्चे नियमित रूप से चल रहे (मौखिक / लिखित) आकलन से गुजरते हैं।
* न्यूरोडेवलपमेंटल समस्याओं वाले बच्चों के लिए श्रवण हानि और द्वि-मासिक वाले बच्चों के लिए प्रत्येक महीने औपचारिक आकलन किया जाता है।
* प्रत्येक अवधि के अंत में योगात्मक आकलन किया जाता है।.
* मासिक के साथ-साथ टर्म-एंड प्रदर्शन भी रिपोर्ट कार्ड में प्रत्येक महीने देखभालकर्ताओं द्वारा समर्थन के लिए उपलब्ध कराया जाता है और उन्हें शैक्षणिक वर्ष के अंत में जारी किया जाता है।.
* मासिक प्रगति रिपोर्ट में बच्चों की स्कोलॉस्टिक और सह-स्कोलास्टिक प्रदर्शन का विवरण निहित होगा और साथ ही देखभाल करने वाले की भागीदारी भी होगी
* पूर्वस्कूली प्रशिक्षण की सभी शर्तों को पूरा करने वाले प्रत्येक बच्चे को खारीज के समय स्कूल की तत्परता परीक्षा से भी गुजरना होगा, जिसके आधार पर भविष्य की शिक्षा / स्कूली शिक्षा के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

1. **उपस्थिति और अनुपस्थिति:**

* देखभालकर्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे प्रति माह न्यूनतम 75% उपस्थिति बनाए रखें।
* यदि कोई बच्चा उपरोक्त मानदंडों को पूरा करने में विफल रहता है, तो उसे उपस्थिति में कमी के लिए पत्राचार में निर्दिष्ट अवधि के लिए उस विशेष अवधि के दौरान प्रीस्कूल पैरेंट एम्पावरमेंट प्रोग्राम (पीपीईपी) में भाग लेने के लिए कहा जाएगा।
* यदि बच्चे की उपस्थिति में कमी के मामले में आवश्यक क्षतिपूर्ति पूरा नहीं करता है, तो उसे पूर्वस्कूली से खारीज कर दिया जायेगा।
* देखभालकर्ता प्रीस्कूल के दौरान वाक् भाषा चिकित्सा / श्रवण के प्रशिक्षण / व्यावसायिक या फिजियोथेरेपी के लिए बच्चे को नियुक्तियां नहीं देगा।
* छुट्टी लेने के मामले में –
* यदि यह पूर्व नियोजित है, तो देखभाल करने वाले पहले से निर्धारित प्रपत्र में छुट्टी का आवेदन कक्षा शिक्षक के पास जमा करेंगे और शिक्षकों से घरेलू प्रशिक्षण के लिए मार्गदर्शन लेंगे।
* आपात स्थिति के मामले में, उन्हें कक्षा शिक्षक को फोन पर या अन्य माध्यमों से जानकारी देने में तत्पर होना चाहिए।
* अवकास के विस्तार के मामले में, कक्षा शिक्षक को समय से पहले सूचित किया जाना चाहिए
* स्वास्थ्य देखभाल के लिए अवकास के मामले में, चिकित्सा प्रमाण पत्र के प्रारूप (प्रपत्र) में आवश्यक साक्ष्य का प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
* देखभालकर्ता को पूर्वस्कूली के लिए प्रतिदिन बच्चों के साथ जाना चाहिए और शिक्षकों द्वारा आवश्यकतानुसार कक्षा / सत्रों में उपस्थित होना चाहिए।

1. **पूर्वस्कूली से निर्वहन:**

* पूर्वस्कूली प्रशिक्षण के सभी आवश्यक कार्यों को पूरा करने की शर्त पर, बच्चों को पूर्वस्कूली से औपचारिक रूप से निर्वहन दे दी जाएगी।
* यह एक पूर्वस्कूली स्नातक समारोह के माध्यम से स्मरण किया जाएगा, जहां उन्हें प्रशिक्षण अवधि के दौरान प्राप्त प्रगति का वर्णन करते हुए एक रिपोर्ट जारी की जाएगी।
* यदि कोई भी बच्चा निर्दिष्ट कार्यकाल सफलतापूर्वक पूरा नहीं करता है और पूर्वस्कूली कर्मचारियों की संतुष्टि के लिए, अंतिम प्रगति रिपोर्ट जारी नहीं की जाएगी। हालाँकि, बच्चे के प्रदर्शन के बारे में देखभालकर्ता को प्रतिपुष्टि प्रदान की जाएगी।
* अनुरोध पर, स्कूल की तत्परता परीक्षण प्रशासित प्रबंधित किया जा सकता है और प्रासंगिक मूल्यांकन रिपोर्ट और साथ ही आगे की शिक्षा / स्कूली शिक्षा के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

1. **पूर्वस्कूली अनुपूरक सेवाओं में पूर्वस्कूली और प्रतिधारण के लिए पुनःप्रवेश (पी.एस.एस.):**

* बंद या अनधिकृत लंबी छुट्टी के बाद पूर्वस्कूली समूह में प्रवेश का विचार नहीं किया जाएगा।
* पी .एस.एस. एक आवश्यकता-आधारित सेवा है जो एक वर्ष की अवधि के लिए पूर्वस्कूली प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक हिस्सा है।
* यह संप्रेषण विकृति के साथ देर से हस्तक्षेप करने वाले बच्चों के लिए पेश किया जाता है - 5.0 से 5.11 वर्ष की आयु सीमा में श्रवण हानि वाले बच्चे और न्यूरोडेवलपमेंटल विकृति वाले बच्चे 9.0 से 9.11 वर्ष की आयु सीमा में।

1. **अन्य:**

* देखभालकर्ता और बच्चों को पूर्वस्कूली के परिसर में स्वच्छता बनाए रखना चाहिए। देखभालकर्ता को बच्चों में स्वच्छता की भावना पैदा करनी चाहिए।
* देखभालकर्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पूर्वस्कूली से संबंधित किसी भी संपत्ति को कोई नुकसान न हो। जो भी दोषी पाया जाएगा उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।
* देखभालकर्ता को अपने बच्चों की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए और यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अन्य बच्चों को नुकसान न पहुँचाएँ।
* देखभालकर्ता को अपने स्वयं के सामान की देखभाल करनी चाहिए। विशेष शिक्षा विभाग अपनी व्यक्तिगत (निजी) वस्तुओं के नुकसान के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

**ध्यान दें**

* संस्थान के प्रमुख के निर्देशों के अनुसार उपरोक्त निबंधन और शर्तें परिवर्तन के अधीन हैं

पूर्वस्कूली निबंधन और शर्तों को संशोधित करने के लिए टीम द्वारा प्रस्तुत

समन्वयक : डॉ. प्रीति वेंकटेश

सदस्य: श्रीमति. बी. एन. शोभा

श्रीमति.एच.पी.सुमना

सुश्री.पी.वी.मंजुला

श्री. मुर्शिदुल आलम

डॉ. जी.मलार